# अध्याय 5: आखिरी चट्टान तक

**विषय-सूची** 4 प्रश्नावली · 18 प्रश्न


| | | |
|---|---|---|
| प्रश्नावली 5.1 | मेरे उत्तर मेरे तर्क (बहुविकल्पीय प्रश्न) | 5 प्रश्न |
| प्रश्नावली 5.2 | मेरी समझ मेरे विचार (बोधात्मक प्रश्न) | 5 प्रश्न |
| प्रश्नावली 5.3 | व्याकरण की बात — क्रिया-विशेषण की पहचान | 3 प्रश्न |
| प्रश्नावली 5.4 | आओ नए वाक्य बनाएँ — रेखांकित शब्दों का अर्थ और नए वाक्य | 5 प्रश्न |


## प्रश्नावली 5.1 — मेरे उत्तर मेरे तर्क (बहुविकल्पीय प्रश्न)

### प्रश्न 1

लेखक ने सूर्यास्त का मनोहारी दृश्य कहाँ से देखा? (क) विवेकानंद चट्टान से (ख) अरब सागर की ओर के ऊँचे टीले से (ग) पश्चिमी क्षितिज से (घ) सैंड हिल से

**हल**

सही उत्तर: (ख) अरब सागर की ओर के ऊँचे टीले से।
लेखक सैंड हिल पर रुककर संतुष्ट नहीं हुआ क्योंकि वहाँ से अरब सागर की दिशा में एक और ऊँचा टीला था जो उधर के विस्तार को ओट में लिए था।
इसलिए लेखक एक के बाद एक कई टीले पार करता रहा और अंततः एक ऊँचे टीले पर पहुँचकर उसने पश्चिमी क्षितिज का खुला विस्तार देखा और वहीं बैठकर सूर्यास्त का दृश्य देखा।
विवेकानंद चट्टान पर लेखक सूर्योदय देखने गया था, सूर्यास्त नहीं।

**उत्तर: (ख) अरब सागर की ओर के ऊँचे टीले से**

### प्रश्न 2

"मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं ही हूँ।" यह कथन लेखक की किस मनःस्थिति को दर्शाता है? (क) मौन हो जाना (ख) विस्मित हो जाना (ग) भ्रमित हो जाना (घ) आशंकित होना

**हल**

सही उत्तर: (ख) विस्मित हो जाना।
लेखक तीनों ओर अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी के संगम पर खड़े होकर विस्तार की अपार शक्ति और शक्ति के विस्तार से इतना अभिभूत हो गया कि वह क्षणभर के लिए अपनी पहचान — कि वह एक जीवित व्यक्ति, दूर से आया यात्री, एक दर्शक है — भूल गया।
यह मौन नहीं था (लेखक बाहरी दृश्य देख रहा था), भ्रम नहीं था (दिशा का बोध था), आशंका नहीं थी — यह विस्मय की उच्चतम अवस्था थी जहाँ व्यक्ति स्वयं दृश्य का हिस्सा बन जाता है।

**उत्तर: (ख) विस्मित हो जाना**

### प्रश्न 3

"मैंने, सिर्फ मैंने उस चोटी को पहली बार सर किया हो।" इस कथन में कौन-सा भाव व्यक्त होता है? (क) करुणा (ख) विनम्रता (ग) आत्मीयता (घ) संतुष्टि

**हल**

सही उत्तर: (घ) संतुष्टि।

लेखक ने थकी टाँगों के बावजूद एक के बाद एक कई रेत के टीले पार किए और अंततः वह टीला पा लिया जहाँ से पश्चिमी क्षितिज का पूरा विस्तार दिखाई देता था।

वाक्य में 'सिर्फ मैंने' पर बल देना यह भाव व्यक्त करता है कि लेखक को अपनी उस कोशिश की सार्थकता से गहरी संतुष्टि मिली, जैसे किसी ने पहली बार किसी पर्वत-चोटी को जीता हो।

यहाँ करुणा, विनम्रता या आत्मीयता का कोई संदर्भ नहीं है — यह व्यक्तिगत उपलब्धि की संतुष्टि है।

**उत्तर: (घ) संतुष्टि**

---

### प्रश्न 4

"शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति" वाक्य में वर्णन है— (क) बलखाती लहरों का (ख) सागर की व्यापकता का (ग) सूर्यास्त के दृश्य का (घ) पश्चिमी क्षितिज का

**हल**

सही उत्तर: (ख) सागर की व्यापकता का।

लेखक विवेकानंद चट्टान की आस-पास की चट्टानों पर खड़े होकर हिंद महासागर की ऊँची-ऊँची लहरों से घिरा था। तीनों दिशाओं में क्षितिज तक पानी-ही-पानी था।

इस अनुभव से लेखक ने महसूस किया — 'शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति' — अर्थात् सागर जितना विस्तृत (व्यापक) है, उतनी ही शक्तिशाली उसकी उपस्थिति है; और उसकी शक्ति में ही उसके विस्तार का रहस्य है।

यह वाक्य सागर की समग्र व्यापकता और उसके प्रभाव का चित्रण करता है, न कि केवल लहरों, सूर्यास्त या क्षितिज का।

**उत्तर: (ख) सागर की व्यापकता का**

---

### प्रश्न 5

लेखक की कन्याकुमारी की यात्रा का वर्णन पढ़कर कहा जा सकता है कि— (क) यह कन्याकुमारी के मौसम को प्रमुखता से वर्णित करता है। (ख) यह यात्रा को जीवंत अनुभूतियों से जोड़ता है। (ग) यह केवल यात्रा के रोमांच पर केंद्रित है। (घ) इसमें कन्याकुमारी का काल्पनिक वर्णन मिलता है।

**हल**

सही उत्तर: (ख) यह यात्रा को जीवंत अनुभूतियों से जोड़ता है।

मोहन राकेश का यह यात्रा-वृत्तांत केवल स्थान-चित्रण नहीं है — इसमें प्रकृति का सजीव रूपांकन, मानव-जीवन और समाज की झलक, और आत्मानुभूति का गहरा समन्वय मिलता है।

लेखक ने सूर्यास्त के रंगों का जीवंत वर्णन, चट्टानों पर खड़े होने का रोमांच और भय, रंगीन रेत को देखने की

उत्कंठा, और विवेकानंद चट्टान पर बैठकर बेकारी की समस्या का अनुभव — सब जीवंत अनुभूतियों से जोड़ा है। मौसम का वर्णन गौण है; रोमांच के साथ भावनाएँ, विस्मय, उदासी भी हैं; वर्णन काल्पनिक नहीं बल्कि वास्तविक अनुभव पर आधारित है।

---

**उत्तर: (ख) यह यात्रा को जीवंत अनुभूतियों से जोड़ता है।**

## प्रश्नावली 5.2 — मेरी समझ मेरे विचार (बोधात्मक प्रश्न)

### प्रश्न 1

यात्रियों का समूह सूर्यास्त का दृश्य देखने के लिए सैंड हिल की ओर बढ़ता जा रहा था लेकिन लेखक सैंड हिल पर पहुँचकर कुछ देर रुकने के बाद दूसरे टीले की ओर बढ़ने लगा। उसके ऐसा करने के पीछे मूल कारण क्या था?

**हल**

लेखक का मूल कारण था — पश्चिमी क्षितिज का पूरा विस्तार देखने की इच्छा।
सैंड हिल से सामने का पूरा विस्तार तो दिखाई दे रहा था, परंतु अरब सागर की तरफ एक और ऊँचा टीला था जो उधर के विस्तार को ओट में लिए था।
लेखक चाहता था कि सूर्यास्त पूरे विस्तार की पृष्ठभूमि में देखा जाए, न कि आधे अवरोधित दृश्य में।
इसी कारण वह एक के बाद एक टीले पार करता गया — टाँगें थकती रहीं पर मन थकने को तैयार नहीं था। हर अगले टीले पर लगता कि 'शायद अब एक ही टीला और है।'
यह लेखक की जिज्ञासु और दृढ़ प्रकृति को दर्शाता है — वह आधे-अधूरे अनुभव से संतुष्ट नहीं था।

**उत्तर: लेखक अरब सागर की दिशा में पश्चिमी क्षितिज का पूरा खुला विस्तार देखना चाहता था; सैंड हिल से वह दृश्य एक और ऊँचे टीले की ओट में था, इसलिए वह आगे बढ़ता गया।**

### प्रश्न 2

लेखक ने कन्याकुमारी के स्थानीय लोगों के विषय में क्या-क्या बताया?

**हल**

लेखक ने विवेकानंद चट्टान पर बैठकर एक ग्रेजुएट नवयुवक से बातचीत की जिसने स्थानीय जीवन की वास्तविकता बताई।
कन्याकुमारी की आठ हजार की आबादी में कम-से-कम चार-पाँच सौ शिक्षित नवयुवक बेकार थे। उनमें से लगभग सौ ग्रेजुएट थे।
उनका मुख्य धंधा था — नौकरियों के लिए अर्ज़ियाँ देना और बैठकर आपस में बहस करना।
वह नवयुवक स्वयं फोटो-एल्बम बेचता था; दूसरे नवयुवक भी इसी तरह के छोटे-मोटे काम करते थे।
नवयुवक ने कहा — 'हम लोग सीपियों का गूदा खाते हैं और दार्शनिक सिद्धांतों पर बहस करते हैं। इस चट्टान से इतनी प्रेरणा तो हमें मिलती ही है।'
इसके अलावा लेखक ने दो स्थानीय नवयुवतियों का भी उल्लेख किया जो यात्रियों को अपनी टोकरियों से शंख-मालाएँ दिखला रही थीं — यह स्थानीय हस्तशिल्प व्यापार का उदाहरण था।
लेखक ने यह भी देखा कि घाट पर भक्तों की मंडली उगते सूर्य को अर्घ्य दे रही थी और मंदिर में पूजा की घंटियाँ बज रही थीं।

**उत्तर: कन्याकुमारी में बड़े पैमाने पर शिक्षित बेरोज़गारी थी — सैकड़ों ग्रेजुएट नौकरी न मिलने पर फोटो-एल्बम बेचने जैसे छोटे काम कर रहे थे; स्थानीय युवतियाँ शंख-मालाएँ बेचती थीं; भक्त मंदिर में पूजा-अर्घ्य देते थे।**

### प्रश्न 3

"अपने प्रयत्न की सार्थकता से संतुष्ट होकर मैं टीले पर बैठ गया" इस पंक्ति में 'प्रयत्न की सार्थकता' से क्या अभिप्राय है?

**हल**

'प्रयत्न की सार्थकता' का अभिप्राय है — लंबे प्रयास के बाद इच्छित लक्ष्य को पा लेना।
लेखक ने सूर्यास्त पूरे पश्चिमी विस्तार में देखने के लिए सैंड हिल से आगे एक-एक करके कई रेत के टीले पार किए। टाँगें थकती रहीं पर मन थकने को तैयार नहीं था।
हर अगले टीले पर पहुँचने पर उसे लगता था कि अब एक और टीला है। अंततः वह उस टीले पर पहुँचा जहाँ से पश्चिमी क्षितिज का खुला विस्तार सामने फैला दिखाई दिया और सूर्य पानी से थोड़ा ही ऊपर था।
इस कठिन प्रयत्न का फल मिला — वह इच्छित दृश्य देख सका। यही 'प्रयत्न की सार्थकता' है।
लेखक ने इस संतुष्टि को 'जैसे वह टीला संसार की सबसे ऊँची चोटी हो और मैंने, सिर्फ मैंने, उस चोटी को पहली बार सर किया हो' — इस भाव से व्यक्त किया।

**उत्तर: 'प्रयत्न की सार्थकता' से अभिप्राय है कि लेखक ने पश्चिमी क्षितिज का खुला दृश्य पाने के लिए कई टीले थककर पार किए और अंततः इच्छित दृश्य प्राप्त हुआ — यह कठिन प्रयास का सफल परिणाम था।**

---

### प्रश्न 4

यात्रा-वृत्तांत में आए उन दृश्यों के विषय में लिखिए जिनका अनुभव लेखक के लिए बिल्कुल नया था।

**हल**

लेखक के लिए बिल्कुल नए अनुभव निम्नलिखित थे—
1. तीन समुद्रों का संगम-स्थल: अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी के संगम पर चट्टान पर खड़े होकर तीनों ओर क्षितिज तक पानी-ही-पानी देखना — यह 'शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति' का नया अनुभव था।
2. रेत के असंख्य अनाम रंग: तट की रेत में इतने विचित्र रंग — काली घटा और घनी लाल आँधी को मिलाकर रेत के आकार में ढालने जैसे रंगों के अलग-अलग सम्मिश्रण। लेखक ने लिखा — 'जैसे रंग उस रेत में थे, वैसे मैंने पहले कभी कहीं की रेत में नहीं देखे थे।'
3. सूर्यास्त का बदलता रंग-क्रम: सूर्य के पानी में डूबते समय रंग इतनी जल्दी-जल्दी बदल रहे थे कि किसी एक क्षण के लिए उन्हें एक नाम देना असंभव था — सोना, फिर लहू, फिर बैजनी, फिर काला।
4. मछुआरों की नाव: रबड़ पेड़ के तीन तनों को साथ जोड़कर बनी मछुआरों की नाव में सवार होकर विवेकानंद चट्टान तक जाना — यह प्रकार की नाव लेखक ने पहले नहीं देखी थी।

**उत्तर: लेखक के लिए नए अनुभव थे — तीन समुद्रों का संगम, तट की रेत के असंख्य अनाम रंग, सूर्यास्त के पल-पल बदलते रंग, और रबड़ के तनों से बनी मछुआरों की नाव में यात्रा।**

---

### प्रश्न 5

यात्रा-वृत्तांत से ऐसे दो अंश चुनकर लिखिए जिससे लेखक की मानसिक दृढ़ता और हार न मानने की प्रवृत्ति का पता चलता है।

**हल**

लेखक की मानसिक दृढ़ता और हार न मानने की प्रवृत्ति के दो अंश—

अंश 1: "टाँगें थक रही थीं पर मन थकने को तैयार नहीं था। हर अगले टीले पर पहुँचने पर लगता कि शायद अब एक ही टीला और है, उस पर पहुँचकर पश्चिमी क्षितिज का खुला विस्तार अवश्य नजर आएगा।"

इस अंश में लेखक शारीरिक थकान के बावजूद मन की दृढ़ता से एक-एक करके टीले पार करता रहा — यह हार न मानने की प्रवृत्ति का स्पष्ट प्रमाण है।

अंश 2: समुद्र के बढ़ते पानी में फँसने पर लेखक ने शीघ्र निर्णय लेकर चट्टान की नोकों पर पैर रखते हुए ऊपर पहुँचकर सुरक्षित रास्ता खोजा। वह भयभीत होने के बावजूद रुका नहीं — "निर्णय तुरंत करना था, इसलिए बिना और सोचे मैं रेत पर बैठकर नीचे तट की तरफ फिसल गया।"

इस अंश में संकट की घड़ी में मानसिक संयम और त्वरित निर्णय लेकर आगे बढ़ना — दृढ़ता का उदाहरण है।

---

**उत्तर: अंश 1 — 'टाँगें थक रही थीं पर मन थकने को तैयार नहीं था' (सूर्यास्त के लिए टीले पार करना); अंश 2 — बढ़ते पानी में फँसने पर त्वरित निर्णय लेकर चट्टान से ऊपर चढ़ना और सुरक्षित रास्ता खोजना।**

## प्रश्नावली 5.3 — व्याकरण की बात — क्रिया-विशेषण की पहचान

### प्रश्न 1

नीचे दिए गए वाक्य में क्रिया-विशेषण पद की पहचान कीजिए और क्रिया जिसकी विशेषता बताई जा रही है वह भी लिखिए— (क) बलखाती लहरें रास्ते की नुकीली चट्टानों से कटती हुई आती थीं।

**हल**

वाक्य: बलखाती लहरें रास्ते की नुकीली चट्टानों से कटती हुई आती थीं।
क्रिया-विशेषण: इस वाक्य में स्पष्ट क्रिया-विशेषण पद नहीं है।
विशेष: 'कटती हुई' एक क्रियावाचक विशेषण (कृदंत विशेषण) है जो लहरों की गति का ढंग बताता है — यह 'आना' क्रिया की विशेषता बताता है।
कुछ विद्वान 'कटती हुई' को रीतिवाचक क्रिया-विशेषण मानते हैं जो बताता है कि लहरें किस प्रकार आती थीं — नुकीली चट्टानों से कटती हुई।
क्रिया जिसकी विशेषता: 'आती थीं' (लहरें किस प्रकार/किस तरह से आती थीं)।

**उत्तर: क्रिया-विशेषण: 'कटती हुई' (ढंगवाचक); क्रिया: 'आती थीं'**

### प्रश्न 2

नीचे दिए गए वाक्य में क्रिया-विशेषण पद की पहचान कीजिए और क्रिया जिसकी विशेषता बताई जा रही है वह भी लिखिए— (ख) यात्रियों की कितनी ही टोलियाँ उस दिशा में जा रही थीं।

**हल**

वाक्य: यात्रियों की कितनी ही टोलियाँ उस दिशा में जा रही थीं।
क्रिया-विशेषण: 'उस दिशा में' — स्थानवाचक क्रिया-विशेषण।
यह क्रिया-विशेषण यह बताता है कि टोलियाँ कहाँ जा रही थीं — उस दिशा में (सैंड हिल की ओर)।
क्रिया जिसकी विशेषता: 'जा रही थीं' — 'उस दिशा में' इस क्रिया की विशेषता (स्थान) बताता है।

**उत्तर: क्रिया-विशेषण: 'उस दिशा में' (स्थानवाचक); क्रिया: 'जा रही थीं'**

### प्रश्न 3

नीचे दिए गए वाक्य में क्रिया-विशेषण पद की पहचान कीजिए और क्रिया जिसकी विशेषता बताई जा रही है वह भी लिखिए— (ग) मैं देर तक भारत के स्थल-भाग की आखिरी चट्टान को देखता रहा।

**हल**

वाक्य: मैं देर तक भारत के स्थल-भाग की आखिरी चट्टान को देखता रहा।
क्रिया-विशेषण: 'देर तक' — कालवाचक क्रिया-विशेषण।
यह क्रिया-विशेषण यह बताता है कि लेखक कब तक/कितने समय तक देखता रहा — देर तक।
क्रिया जिसकी विशेषता: 'देखता रहा' — 'देर तक' इस क्रिया की विशेषता (अवधि/काल) बताता है।

**उत्तर: क्रिया-विशेषण: 'देर तक' (कालवाचक); क्रिया: 'देखता रहा'**

## प्रश्नावली 5.4 — आओ नए वाक्य बनाएँ — रेखांकित शब्दों का अर्थ और नए वाक्य

### प्रश्न 1

वाक्य में रेखांकित शब्द का अर्थ बताते हुए उससे नया वाक्य बनाइए— तीनों तरफ से क्षितिज तक पानी-पानी था। (रेखांकित शब्द: क्षितिज)

**हल**

शब्द: क्षितिज
अर्थ: वह स्थान जहाँ धरती और आकाश मिलते हुए दिखाई देते हैं; दृष्टि-सीमा।
नया वाक्य: समुद्र तट पर खड़े होकर क्षितिज को निहारना एक अद्भुत अनुभव होता है।

**उत्तर: क्षितिज = वह काल्पनिक रेखा जहाँ धरती और आकाश मिलते दिखाई देते हैं। नया वाक्य: समुद्र तट पर खड़े होकर क्षितिज को निहारना एक अद्भुत अनुभव होता है।**

### प्रश्न 2

वाक्य में रेखांकित शब्द का अर्थ बताते हुए उससे नया वाक्य बनाइए— पीछे दाईं तरफ दूर-दूर हटकर नारियलों के झुरमुट नजर आ रहे थे। (रेखांकित शब्द: झुरमुट)

**हल**

शब्द: झुरमुट
अर्थ: समूह, मंडली; पास-पास उगे पेड़ या झाड़ जिनकी डालियाँ मिलकर कुंज-सा बना रही हों।
नया वाक्य: नदी के किनारे बाँस के झुरमुट में चिड़ियाँ घोंसला बनाकर रहती हैं।

**उत्तर: झुरमुट = पास-पास उगे पेड़ों का घना समूह। नया वाक्य: नदी के किनारे बाँस के झुरमुट में चिड़ियाँ घोंसला बनाकर रहती हैं।**

### प्रश्न 3

वाक्य में रेखांकित शब्द का अर्थ बताते हुए उससे नया वाक्य बनाइए— दूर तक एक रेत की लंबी ढलान थी। (रेखांकित शब्द: ढलान)

**हल**

शब्द: ढलान
अर्थ: नीचे की ओर झुका हुआ धरातल; उतार।
नया वाक्य: पहाड़ की ढलान पर बर्फ जमी थी जिससे रास्ता फिसलन भरा हो गया था।

**उत्तर: ढलान = नीचे की ओर झुका हुआ धरातल। नया वाक्य: पहाड़ की ढलान पर बर्फ जमी थी जिससे रास्ता फिसलन भरा हो गया था।**

### प्रश्न 4

वाक्य में रेखांकित शब्द का अर्थ बताते हुए उससे नया वाक्य बनाइए— पश्चिमी तट के साथ-साथ सूखी पहाड़ियों की एक श्रृंखला दूर तक चली गई थी। (रेखांकित शब्द: श्रृंखला)

**हल**

शब्द: श्रृंखला
अर्थ: क्रम से जुड़ी हुई वस्तुओं की पंक्ति; माला, कड़ियाँ।
नया वाक्य: हिमालय पर्वत-श्रृंखला उत्तर भारत की रक्षा करती है।

**उत्तर: श्रृंखला = क्रमबद्ध पंक्ति। नया वाक्य: हिमालय पर्वत-श्रृंखला उत्तर भारत की रक्षा करती है।**

## प्रश्न 5

वाक्य में रेखांकित शब्द का अर्थ बताते हुए उससे नया वाक्य बनाइए— सामने फैली रेत के कारण बहुत रूखी, बीहड़ और वीरान लग रही थी। (रेखांकित शब्द: बीहड़)

**हल**

शब्द: बीहड़
अर्थ: ऊबड़-खाबड़ और विकट स्थान; निर्जन और खुरदुरा भूभाग।
नया वाक्य: चंबल के बीहड़ों में एक समय डाकुओं का बोलबाला था।

**उत्तर: बीहड़ = ऊबड़-खाबड़, विकट और निर्जन स्थान। नया वाक्य: चंबल के बीहड़ों में एक समय डाकुओं का बोलबाला था।**